

इमानुएल कांट के अनुसार “क्रिटिसिज़्म” (Criticism) क्या है?

इमानुएल कांट आधुनिक दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिकों में से एक माने जाते हैं। उनके दर्शन का केंद्रीय तत्व “क्रिटिसिज़्म” (समालोचनावाद) है। कांट ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को “आलोचनात्मक दर्शन” (Critical Philosophy) कहा। यहाँ “क्रिटिसिज़्म” का अर्थ साधारण आलोचना या दोष निकालना नहीं है, बल्कि यह मानव बुद्धि (Reason) की सीमाओं, शक्तियों और कार्यप्रणाली की गहन जाँच-पड़ताल है।

1. क्रिटिसिज़्म का मूल अर्थ

कांट के अनुसार, क्रिटिसिज़्म का अर्थ है—मानव बुद्धि की क्षमता और सीमा का सम्यक परीक्षण। कांट से पहले दर्शन दो प्रमुख धाराओं में बँटा हुआ था:

1. रैशनलिज़्म (बुद्धिवाद) – जैसे डेसकार्ट, स्पिनोज़ा और लाइबनिट्ज़, जो मानते थे कि ज्ञान का मुख्य स्रोत बुद्धि है।
2. एम्पिरिसिज़्म (अनुभववाद) – जैसे लॉक, बर्कले और ह्यूम, जो मानते थे कि ज्ञान का स्रोत अनुभव है।

कांट ने इन दोनों विचारधाराओं के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि ज्ञान न तो केवल अनुभव से आता है और न ही केवल बुद्धि से; बल्कि दोनों के संयुक्त योगदान से उत्पन्न होता है। इस संतुलन को स्थापित करने के लिए उन्होंने बुद्धि की “आलोचना” की—अर्थात् उसकी सीमाओं और क्षमताओं का विश्लेषण किया।

2. क्रिटिक ऑफ़ प्योर रीजन (शुद्ध बुद्धि की समालोचना)

कांट की प्रसिद्ध कृति Critique of Pure Reason (1781) में उन्होंने यह प्रश्न उठाया—“हम क्या जान सकते हैं?”

इस ग्रंथ में कांट ने बताया कि हमारा ज्ञान दो तत्वों से मिलकर बनता है:

- * संवेदन (Sensibility) – जिसके माध्यम से हमें वस्तुओं का अनुभव होता है।
- * बुद्धि (Understanding) – जो उन अनुभवों को व्यवस्थित और अर्थपूर्ण बनाती है।

कांट के अनुसार, समय (Time) और स्थान (Space) बाहरी वस्तुओं के गुण नहीं हैं, बल्कि वे हमारे मन के ढाँचे (forms of intuition) हैं। यानी हम संसार को समय और स्थान के माध्यम से ही देख सकते हैं। इसी प्रकार, कारण-कार्य (Cause and Effect) जैसी श्रेणियाँ (Categories) भी हमारे मन की संरचना का हिस्सा हैं।

इस प्रकार, क्रिटिसिज़्म का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि ज्ञान की प्रक्रिया में मन की क्या भूमिका है और उसकी सीमा कहाँ तक है।

3. फिनोमिना और न्यूमिना

कांट ने संसार को दो भागों में विभाजित किया:

1. फिनोमिना (Phenomena) – वे वस्तुएँ जिन्हें हम अनुभव कर सकते हैं।
2. न्यूमिना (Noumena) – “वस्तु-स्वरूप” (Thing-in-itself), जिसे हम सीधे नहीं जान सकते।

कांट के अनुसार, हम केवल फिनोमिना को जान सकते हैं क्योंकि वे हमारे अनुभव और मानसिक संरचना के माध्यम से प्रकट होते हैं। न्यूमिना को हम नहीं जान सकते, क्योंकि वह हमारी संवेदनशीलता और बुद्धि की सीमाओं से परे है।

यहाँ क्रिटिसिज़्म का अर्थ है—ज्ञान की सीमा तय करना। कांट कहते हैं कि हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि कुछ प्रश्न (जैसे आत्मा, ईश्वर और ब्रह्मांड की अनंतता) शुद्ध बुद्धि की पहुँच से बाहर हैं।

4. मेटाफिजिक्स की समीक्षा

कांट से पहले पारंपरिक मेटाफिजिक्स (तत्त्वमीमांसा) ईश्वर, आत्मा और ब्रह्मांड के बारे में निश्चित दावे करती थी। कांट ने इन दावों की आलोचनात्मक जाँच की।

उनका निष्कर्ष था कि जब बुद्धि अपनी सीमा से बाहर जाकर ऐसे विषयों पर निर्णय लेने की कोशिश करती है, तो वह भ्रम (Illusion) में पड़ जाती है। इसलिए क्रिटिसिज़्म का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि दर्शन को भ्रम और अंधविश्वास से बचाया जाए।

5. नैतिक क्षेत्र में क्रिटिसिज़्म

कांट ने केवल ज्ञान की ही नहीं, बल्कि नैतिकता की भी आलोचनात्मक जाँच की। उनकी दूसरी प्रसिद्ध कृति Critique of Practical Reason में उन्होंने यह प्रश्न उठाया—“हमें क्या करना चाहिए?”

कांट के अनुसार, नैतिकता का आधार अनुभव नहीं, बल्कि “कर्तव्य” (Duty) और “सार्वभौमिक नियम” (Universal Law) है। उन्होंने “Categorical Imperative” का सिद्धांत दिया, जिसके अनुसार हमें वही कार्य करना चाहिए जिसे हम सार्वभौमिक नियम के रूप में स्वीकार कर सकें।

यहाँ भी क्रिटिसिज़्म का अर्थ है—नैतिक सिद्धांतों की तार्किक परीक्षा।

6. सौंदर्यशास्त्र में क्रिटिसिज़्म

अपनी तीसरी कृति Critique of Judgment में कांट ने सौंदर्य और उद्देश्य (Teleology) पर विचार किया। उन्होंने यह प्रश्न उठाया—“हम क्या आशा कर सकते हैं?”

कांट के अनुसार, सौंदर्य का अनुभव न तो केवल व्यक्तिगत है और न ही पूरी तरह वस्तुगत; बल्कि यह एक ऐसी भावना है जिसे हम सार्वभौमिक रूप से साझा कर सकते हैं। यहाँ भी उन्होंने मानव निर्णय-शक्ति (Judgment) की आलोचनात्मक जाँच की।

7. क्रिटिसिज़्म का महत्व

कांट का क्रिटिसिज़्म आधुनिक दर्शन में एक “कोपरनिकन क्रांति” के समान माना जाता है। जिस प्रकार कोपरनिकस ने कहा कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, उसी प्रकार कांट ने कहा कि वस्तुएँ हमारे ज्ञान के अनुसार ढलती हैं, न कि हमारा ज्ञान वस्तुओं के अनुसार।

उनका मुख्य उद्देश्य था—

- * ज्ञान की सीमाओं को निर्धारित करना
- * विज्ञान को मजबूत आधार देना
- * मेटाफिजिक्स को तर्कसंगत बनाना
- * नैतिकता को सार्वभौमिक आधार प्रदान करना

8. निष्कर्ष

कांट के अनुसार, का अर्थ साधारण आलोचना नहीं, बल्कि मानव बुद्धि की शक्तियों और सीमाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण है। उन्होंने यह दिखाया कि हम क्या जान सकते हैं, क्या नहीं जान सकते, हमें क्या करना चाहिए, और हम किस बात की आशा कर सकते हैं।

इस प्रकार, कांट का क्रिटिसिज़्म दर्शन को एक नई दिशा देता है। यह हमें सिखाता है कि असीम दावे करने के बजाय हमें अपनी बुद्धि की सीमा को समझना चाहिए।

अंततः, कांट का क्रिटिसिज़्म ज्ञान, नैतिकता और सौंदर्य—तीनों क्षेत्रों में संतुलन और तर्कसंगतता स्थापित करने का प्रयास है। यही कारण है कि उनका आलोचनात्मक दर्शन आज भी आधुनिक विचारधारा की आधारशिला माना जाता है।